http://www.developindiagroup.co.in/

एम.पी.पी.एस.सी.

मध्य प्रदेश राज्य सिविल सेवा

मुख्य परीक्षा अध्ययन सामग्री

पूर्णतः संशोधित एवं अद्यतन

सामान्य अध्ययन

प्रश्नपत्र – I

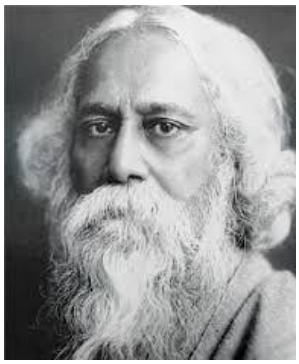

Prepared by
Develop India Group

समान्य अध्ययन

प्रश्नपत्र – I

इतिहास एवं संस्कृति

इतिहास एवं संस्कृति

विश्व इतिहास

पुनर्जागरण मूलतः मध्यकाल के ईश्वर केंद्रित सभ्यता से आधुनिक युग के मानव केंद्रित सभ्यता की ओर एक परिवर्तन था। सामंतवादी व्यवस्था के विघटन के साथ यूरोप में एक नए प्रकार की समाज व्यवस्था का उदय हो रहा था। जिसने जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित किया और जिसके साथ आधुनिक युग का प्रारम्भ हुआ।

पुनर्जागरण (Renaissance) रेनेसां को पुनर्जीवन भी कहते हैं। इसके अतिरिक्त इसे पुनर्जन्म, पुनर्जागृति, बौद्धिक चेतना, सांस्कृतिक पुनरुत्थान आदि नामों से भी जाना जाता है। अंग्रेजी भाषा में प्रचलित शब्द *'रेनेसां'* मूलतः एक फ्रेंच शब्द है जिसका अर्थ होता है *'फिर से जागना'* पश्चिमी सभ्यता के विकास में इनका सम्बंध 14–16वीं शताब्दी के बीच हुई उस सांस्कृतिक प्रगति से है जो प्राचीन यूनानी और रोमनों की सभ्यता व संस्कृति से प्रभावित थी और उसकी पुनर्स्थापना करना चाहती थी। लेकिन यह आंदोलन इस उद्देश्य से भी कहीं आगे निकल गया। इसने अज्ञात को जानने के प्रति एक नई जिज्ञासा उत्पन्न की। यह मात्र कला एवं साहित्य के पुनरुत्थान तक ही सीमित नहीं रहा, अपितु इसने धर्म और राजनीति को भी प्रभावित किया। इससे सीखने और जानने की भावना का जन्म हुआ। इसलिए जो अवधारणा तर्क की कटौती पर खरी नहीं उतरी, उसे पूरी तरह अस्वीकार कर दिया गया।

पुनर्जागरण का प्रारम्भ इटली में हुआ। भारत या इटली के नगरों का विकास सामंती नियंत्रण से मुक्त स्वतंत्र वातावरण में हुआ था। इस स्वतंत्रता ने विचारों की स्वतंत्रता और जोखिम भरे कार्य करने की तीव्र भावना भर दी। इन नगरों के शासक कलाकारों और साहित्यकारों के संरक्षक थे। इन शासकों ने उन यूनानी विद्वानों का स्वागत किया जो कुछ समय पूर्व कुस्तुनतुनिया के पतन के कारण इटली में आकर बस गए थे। ये अपने साथ अपने ग्रंथ व ज्ञान भी लेकर आए थे। इस प्रकार प्राचीन यूनान के ज्ञान का प्रसार भी इटली में हुआ जिसने पुनर्जागरण में सहयोग दिया। पुनरुत्थान अभियान का काल निर्धारण अत्यंत दुष्कर कार्य है क्योंकि ये घटनाएं एक ही देश अथवा एक ही समय की उपज नहीं थी। वस्तुतः इन घटनाओं का प्रादुर्भाव समय–समय पर विभिन्न देशों में हुआ। जिन्होंने समय–समय पर पुनर्जागरण की पृष्ठभूमि का निर्माण किया। जिसके परिणामस्वरूप मनुष्य मध्यकालीन बंधनों से मुक्त होकर स्वतंत्र चिंतन की ओर अग्रसर हुआ तथा मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं का उत्थान प्रारम्भ हुआ जो उस युग की कला, साहित्य, दर्शन एवं विज्ञान आदि क्षेत्रों में परिलक्षित हुई।

पुनर्जागरण काल में साहित्य

साहित्य के क्षेत्र में पुनर्जागरण काल में अभूतपूर्व परिवर्तन देखने को मिलते हैं। पुनर्जागरण के पूर्व साहित्य का निर्माण मुख्यतः लैटिन व यूनानी भाषाओं में होता था किंतु इस काल में देशी व क्षेत्रीय भाषाओं का भी प्रयोग हुआ जिसके परिणामस्वरूप इटालियन फ्रेंच, स्पेनिश, पुर्तगाली, जर्मन, अंग्रेजी आदि भाषाओं का विकास एवं इन्हीं भाषाओं में साहित्य का निर्माण भी हुआ। इस प्रकार बोलचाल की भाषा में साहित्य निर्माण पुनर्जागरण की मुख्य विशेषता थी। इस काल के साहित्य की दूसरी प्रमुख विशेषता थी इसकी विषयवस्तु का धार्मिक से लौकिक होना। इस युग के साहित्य में धार्मिक विषयों के स्थान पर मनुष्य के जीवन और उसके कार्यकलाप को महत्त्व दिया गया। अब साहित्य आलोचना प्रधान, मानववादी और व्यक्तिवादी हो गया। इस काल में एक अन्य महत्त्वपूर्ण परिवर्तन साहित्य निर्माण की शैली (व्यंग्य का प्रयोग तथा ग्रंथ का विकास) में भी देखने को मिलता है।

पुनर्जागरण कालीन इन विशेषताओं की अभिव्यक्ति विभिन्न देशों के साहित्यकारों ने की। जिसके परिणामस्वरूप इतालवी, अंग्रेजी व फ्रांसीसी साहित्य का उद्भव हुआ। इन साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से अन्य देशों के विद्वानों को नई दिशा प्रदान की। इतालवी साहित्यकारों में दांते (1265–1321 ई.), फ्रांसेस्को पैटार्क (1304–1374 ई.) तथा ज्योवानी बुकासियो (1313–75 ई.) मुख्य है। दांते ने अपनी कविताओं, पैटार्क ने अपनी जीवनियों और बुकासियों ने अपनी कथाओं के माध्यम से इटालियन साहित्य को समृद्ध बनाया। दांते (डिवाइ कॉमेडी के लेखक) को इतालवी कविता का पिता कहा जाता है। उसने अपनी कविताएं लैटिन भाषा के साथ–साथ मातृभाषा (तस्कनी) में लिखी। पैटार्क ने अपनी कविताओं में प्रकृति का और मनुष्य के हर्ष एवं विशाद का मार्मिक वर्णन किया है। मानवतावादी के रूप में पुनर्जागरण का प्रतिनिधित्व करने वाला प्रथम व्यक्ति पैटार्क ही था। इसलिए उसे मानवतावाद का पिता कहा गया है। पुनर्जागरण का पूर्ण प्रतिनिधित्व पैटार्क के शिष्य बुकासियों ने किया। कहानीकार के रूप में उनकी सर्वश्रेष्ठ कृति डैकमैरोन है। बुकासियों ने एक नई हास्य प्रधान कहानी का प्रयोग किया था।

फ्रांसीसी साहित्य के दो पुरोधा रेबेलास (1495–1553 ई.) तथा मॉन्टेन (1533–1592 ई.) इसी युग की देन है। रेबेलास ने हास्य एवं व्यंग्य मिश्रित शैली का अनुसरण किया जबकि मॉन्टेन ने अपने साहित्य को निबंध लेखन के माध्यम से व्यक्त किया जो फ्रांसीसी में लिखे गए हैं। मॉन्टेन एक निबंधकार के साथ–साथ मानवतावादी था। वह तत्कालीन सत्ता एवं मध्यकालीन आतंक के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ और इस प्रकार उसे प्रथम आधुनिक व्यक्ति की उपाधि मिली।

http://www.developindiagroup.co.in/